राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रजा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 4 अगस्त 2011 – 10 अगस्त 2011, वर्ष : 8, अंक : 37,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in
www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने के लिए आवश्यक है स्वयं की खोज

मित्रो, मनुष्य की यह नैसर्गिक प्रवृत्ति है कि उसे अपनी कमियां दिखाई नहीं देतीं, यदि कुछ खामियां दिखाई भी देती हैं तो वह उन्हें नजरअंदाज करता रहता है। इसके विपरीत दूसरों की खामियों में मनुष्य की गहरी दिलचस्पी होती है। लगता है कि समाज में एक फैशन सा चल पड़ा है कि दूसरों की बुराइयों की चर्चा चटकारे ले लेकर की जाए। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मनुष्य के अंदर कोई बुराई ही नहीं है। किंतु जो लोग समझदार होते हैं, वे दूसरों की बुराइयां देखने के पहले अपने अंदर भी पूरी तरह टटोल लेते हैं कि कैसी कैसी बुराइयां मेरे अंदर भरी हुई हैं। ऐसे आचरण वाले लोग बड़ी आसानी से दूसरों के दिल में अपनी जगह बना लिया करते हैं।

दूसरों में दोष देखने वाले लोग कभी भी सुख-समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो पाते। दूसरों की बुराइयों पर नजर रखने से अपने अंदर बुराइयां आने लगती हैं। इसलिए हमें सदैव अपने अचारण को सुधारना होगा। आचरण के परिष्कार के प्रति हम जितने ही सतर्क रहेंगे उतने ही बुराइयों से दूर रहेंगे। आचरण की शुचिता से ही हमारा चिंतन उत्कृष्ट एवं परिपक्व होता है, जिससे हममें स्वयं अपनी और जरूरतमंदों की मदद करने की सामर्थ्य अर्जित होती है।

ध्यान रहे, आत्मअवलोकन से हम अपनी कमियों को जानकर उन्हें बाहर निकाल सकते हैं। हम जितने ही बुराइयों से दूर रहेंगे, उतना ही हमारा अचारण उत्कृष्ट होता जाएगा। क्योंकि सारी बुराइयां इस शरीर से ही होती है। उनमें भी स्वार्थजनित कारणों एवं शारीरिक सुख-सुविधाओं की आकांक्षा के चलते ही हमारे अंदर बुराइयों की भरमार हो जाती है और हमें पता भी नहीं चलता कि ये हमारे अंदर कैसे आ गयीं। इससे हमें सदैव बचना चाहिए। दूसरों से आवश्यकता से अधिक अपेक्षाएं पालना भी हमारे अंदर

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार 6 अगस्त से 12 अगस्त 2011 तक (श्रावण शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
06	शनि	अष्टमी	स्वाति	तुला	दुर्गाष्टमी, मेला चिंतपूर्णी, भद्रा समाप्त अपराह्न 4.41 बजे
07	रवि	नवमी	विशाखा	वृश्चिक	...
08	सोम	दशमी	अनुराधा	वृश्चिक	...
09	मंगल	एकादशी	ज्येष्ठा	धनु	पवित्रा एकादशी
10	बुध	द्वादशी	मूल	धनु	...
11	गुरु	त्रयोदशी	पू.षा.	मकर	प्रदोष व्रत
12	शुक्र	चतुर्दशी	उ.षा.	मकर	भद्रा प्रारंभ रात्रि 11.46 बजे से

प्रजा की संपूर्ण प्रस्तुति : श्री शनिधाम शिक्षा एवं शोध संस्थान, श्री शनिधाम ट्रस्ट , असोला फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली। फोन : 26653500, 26654400, Web Site : www.shanidham.in E-mail: shaninationstimes@gmail.com

पिछले कई वर्षों से मुझे आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ रहा है। कर्ज का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। संतान न होने की वजह से घर में भी उदासी छायी रहती है। मैं अपनी जन्मकुंडली भेज रहा हूं। कृपया मुझे उचित सलाह दें जिससे मुझे कर्जे से मुक्ति मिले, संतान-सुख प्राप्त हो और व्यवसाय में सफलता मिले।

– सुधांशु गुप्ता

आपका वृषभ लग्न व मीन राशि है। इस समय आप को सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा है। आगे आने वाली दशाएं भी अच्छी है। गोचर की स्थिति अच्छी होती जा रही है। 15 सितंबर के बाद आप प्रयत्नशील रहें। आपको अच्छे शुभफल मिलने शुरू हो जायेंगे। आप सफल व्यवसाय कर सकते है, समय ठीक है। धीरे-धीरे कर्जे से मुक्ति मिल जायेगी।

आप माणिक्य सोने में धारण करें। आप प्रयत्नशील रहें, संतान सुख के लिए समय अनुकुल है। चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि पंचम भाव पर है। आप की धर्म पत्नी बृहस्पति वार का व्रत करें। आप सूर्य को प्रतिदिन जल दें व शिव मंदिर में शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।

सूर्य का मंत्र जाप करें ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नामः ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

E-Mail: shanidham@gmail.com

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

क्रमागत

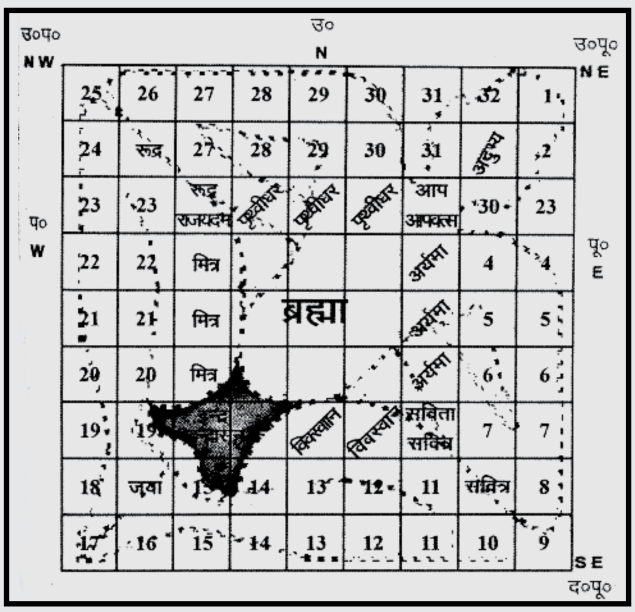

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

भूमि-क्रय करने के उद्देश्य क्या हैं?

भूमि खरीदने के अनेक उद्देश्य होते हैं। अधिकांशतः लोग भवन-निर्माण हेतु भूमि-क्रय करते हैं। कुछ व्यापार तो कुछ कालोनी बसाने एवं भूखण्डों को गृहस्थों के हाथ बेच कर धनोपार्जन करते हैं। कुछ व्यक्ति धन को निवेश करने के लिए भूमि खरीदते हैं। किसी भी भूखण्ड को खरीदते समय शुभाशुभता पर विचार करने के लिए भू-परीक्षण अनिवार्य होता है।

क्या यह सही है?

प्रायः देखा जाता है कि भूमि के अभाव में व्यक्ति श्मशान के पास भी गृह-निर्माण करते हैं। यह सर्वथा अनुचित व अशुभ है और उसमें रहने वाला परिवार पूर्ण रूप से सुखी नहीं रहता है। यदि कोई व्यक्ति बिना विचार किए भूमि क्रय करके गृह-निर्माण करता है, तो ऐसा भवन प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होकर धराशायी हो जाता है।

इसके लिए क्या करें?

भूमि माता होने के कारण हमारी आराध्या है। अतः भूमि-क्रय के पूर्व शुभ मुहूर्त में विधिवत् परीक्षण करा लेना चाहिए। भूमि-क्रय और क्षेत्र-पूजन के पश्चात् शल्य-शोधन भी आवश्यक होता है।

भूमि के प्रकार

वर्ण के अनुसार भूमि चार तरह की होती है।

1. ब्राह्मणी भूमि
2. क्षत्रिया भूमि
3. वैश्या भूमि
4. शूद्रा भूमि

1. ब्राह्मणी भूमि

ब्राह्मणी भूमि की मिट्टी सफेद रंग की होती है, चखने पर स्वाद में मिठास का अनुभव होता है। यह सुन्दर गन्ध वाली होती है। गृहस्थजनों के लिए शुभ व मंगलमयी होती है। ऐसी भूमि पर गृह-निर्माण करके रहने वाला व्यक्ति शुद्ध चित्त वाला, धन-धान्य एवं सम्पूर्ण सुखों से युक्त होता है। निवासी सरस्वती व लक्ष्मी जी के कृपा-पात्र बने रहते हैं। ऐसी भूमि विश्वविद्यालय, विद्यालय, मन्दिर, धर्मशाला एवं साहित्यिक संस्था तथा मांगलिक कार्यों हेतु भवन-निर्माण के योग्य होती है।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

नौवें भाव में राहु का फल व उपाय
धर्म तेरा ढोलक या
बच्चों को जाती।
बचेगी कहां तक
हाथी से बजती॥

लाल किताब के अनुसार नौवें भाव में बैठा राहु 'पागलों का हकीम' मगर बेईमान होता है। नौवें भाव में राहु वाला जातक संभवतः पागलों का डाक्टर, वैद्य या पागलों की चिकित्सा करने का गुण रखने वाला हो सकता है। यदि ऐसा जातक किसी साधु का साथ करें तो उसका फजूल खर्च बढ़ जाता।

यदि यदि जातक के निज पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप जन्मकुंडली के नौवें भाव में राहु हो और बृहस्पति पांचवें या ग्यारहवें भाव में हों तो बृहस्पति के शुभ फलों में कमी आ सकती है। नौवें भाव में बैठा राहु चन्द्रमा के फल को कमजोर करता है जिसकी वजह से जातक को अपनी संतान की चिंता लगी रहती है। उसकी आमदनी पर भी इसका बुरा असर पड़ता है। यदि इस भाव में बैठा राहु बहुत ही अशुभ

हो रहा हो तो गर्भवती महिलाओं को गर्भपात की आशंका बढ़ जाती है। ऐसा जातक यदि अपने परिवार के वृद्धजनों से संबंध अच्छे न रखे तो इससे उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

यदि यदि जातक के निज पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप जन्मकुंडली के नौवें भाव में राहु होने पर ससुराल से अपने संबंध अच्छे रखना व परिवार के साथ एक साथ रहना राहु के बुरे फल में कमी करता है। नौवें भाव में राहु हो और पहला भाव यदि खाली हो तो जातक के स्वास्थ्य व सम्मान में कमी का कारण बनता है। उसे अपने बुजुर्गों की ओर से भी परेशानी उठानी पड़ती है। राहु नौवें और शनि पांचवें भाव में हो तो जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। संतान पैदा होने की संभावना तो रहती है, यदि पहली संतान लड़की हो जाये तो जातक को पुत्र भी होता है किंतु उसका सुख जातक को नहीं मिलता।

यदि यदि जातक के निज पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप जन्मकुंडली के नौवें भाव में राहु हो और व्यक्ति जमीन में तंदुर या पानी की टंकी बनाये या उसमें घर की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बाहर आने की नाली हो या काले रंग का कुत्ता गुम हो जाये या बिना बीमारी के हाथ के नाखून खराब होने लगें तो राहु अशुभ फल देने वाला हो जाता है। यदि किसी अशुभ ग्रहचाल के कारण वह मर जाये तो दूसरा रख लेना चाहिए। ऐसी दशा में जातक की हथेली पर भाग्य रेखा की जड़ पर राहु का निशान दृष्टिगोचर होता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

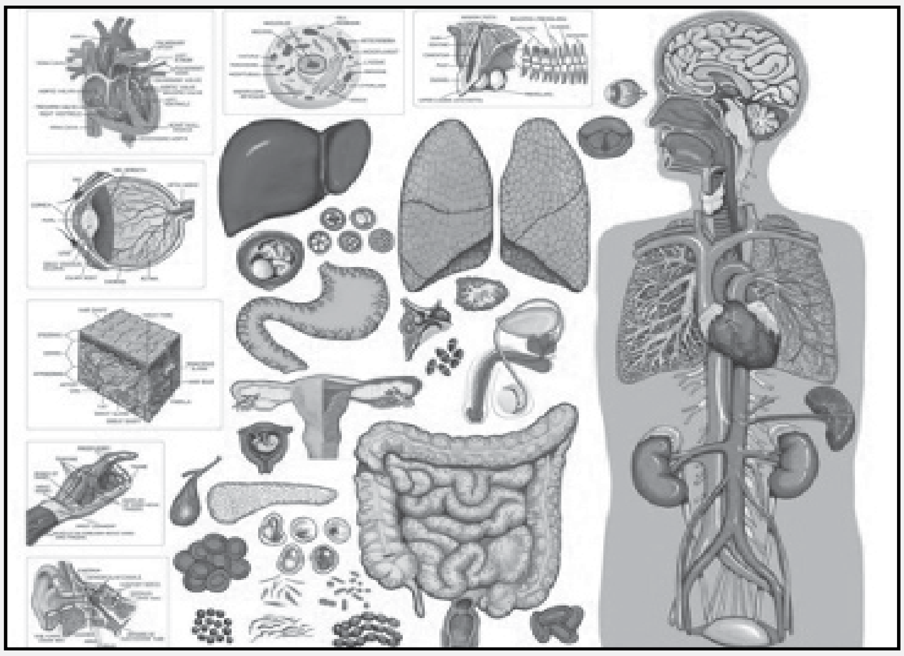

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

प्राणायाम के अभ्यास से अपने प्राणों को यथेष्ट सबल व सशक्त बना लेने वाले लोग ही अपने अंदर प्रवाहित होने वाले रक्त में ऐसा

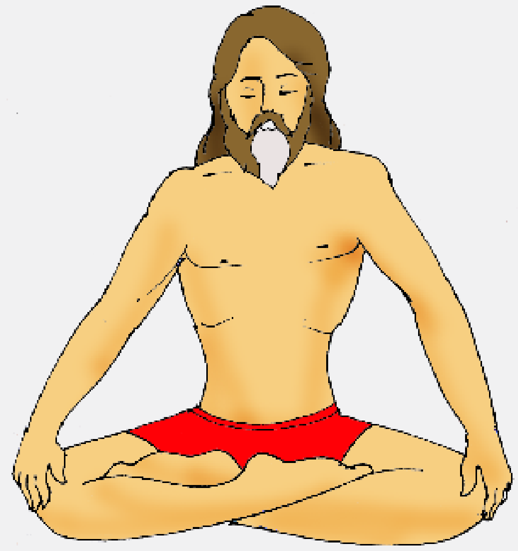

विशिष्ट स्पंदन पैदा करने में सफल होते हैं जिनसे शारीरिक व मानसिक रोगों का बड़ी सरलता से उपचार हो जाता है। प्राणायाम से रोगों का शमन करने वाले चिकित्सक सभी शारीरिक रोगों और मानसिक दोषों का निदान सबल प्राण की कमी मानकर करते हैं। उनका विश्वास है, जिस व्यक्ति में सबल प्राण की मात्रा कम हो जाती है, उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग ढीले पड़ जाते हैं। वे अपना कार्य सही रीति से संपादित नहीं कर पाते। उनके यकृत, आंतों, गुर्दों, हृदय, मस्तिष्क और नलिका विहीन ग्रंथियों में सबल प्राण की कमी से ही कोई विकृति आती है, जिससे आहार ठीक तरह से नहीं पचता। पेट खराब हो जाता है। ठीक तरह से भोजन के पाचन न होने से आम रस कच्चा आहार रस अधिक मात्रा में बनने लगता है और अंग-प्रत्यंग को दूषित करता जाता है। इस प्रकार अंग-प्रत्यंग की शिथिलता रक्त व रक्त-संचार को धीमा कर देती है, जिससे छीजे हुए मृत कोषों का निष्कासन शरीर के बाहर यथायोग्य नहीं हो पाता। रक्त के माध्यम से शरीर में विजातीय द्रव्य अधिक एकत्र हो जाते हैं, परिणामत: उन्हें रोग आ घेरते हैं। इस तरह शरीर में आम रस या विजातीय द्रव्य की वृद्धि के मूल में सबल प्राण की कमी ही अवस्थित रहती है। वही मुख्य कारण है। जीवाणुवादी चिकित्सक भी इस तथ्य को स्वीकारते हैं। उनका कहना है कि जीवाणु उन्हीं लोगों को रोग-ग्रस्त बनाते हैं जिनकी जीवनी-शक्ति रोग के जीवाणुओं को आत्मसात करने में असफल रहती है।

इस प्रकार जब आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सक भी प्रकारांतर से प्राण शक्ति की कमी को ही सभी प्रकार की बीमारियों का मूल मानते हैं, उनके अनुसार भी प्राण-शक्ति की निर्बलता ही आधि-व्याधि की जननी है, तब स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि प्राणों की सबलता ही रोगों के शमन का एक सुंदर उपाय है, ऐसा कहना सर्वथा युक्ति पूर्ण है।

क्रमश:

साप्ताहिक राशिफल

11 अगस्त - 17 अगस्त तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

11 को समय मध्यम होगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। शुभ कार्य संपन्न होगा। 12, 13, 14 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। प्रतियोगिता व परीक्षा आदि में विजयी होंगे। 15, 16 को समय शुभ व अनुकूल होंगे। विवाह-सगाई के योग बनेंगे। घर-परिवार का सुख मिलेगा। 17 को ग्रह-गोचर की स्थिति अशुभ व प्रतिकूल होगी।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

11 को ग्रह-गोचर की स्थिति अशुभ फलप्रद होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में संयम रखना आवश्यक होगा। 12, 13, 14 को समय मध्यम होगा। परिश्रम के बावजूद कार्य-क्षेत्र की स्थिति मध्यम होगी। धन की आवश्यकता महसूस करेंगे। 15, 16 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुन: शुभ व अनुकूल होगी। साहस व पराक्रम तेज होगा। 17 को समय शुभ है।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

11 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। साहस, पराक्रम व तेज बढ़ेगा। 12, 13, 14 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। बंटवारे आदि को लेकर घर में कलह होना संभव होगा। 15, 16 को समय मध्यम होगा। मन में आलस्य व निराशा के भाव होंगे। कार्य-व्यवसाय आदि में रुचि नहीं होगी। 17 को अनुकूल व लाभप्रद स्थिति प्राप्त होगी।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

11 को ग्रह-गोचर की अनुकूलता शुभ फलों को देने में समर्थ होगी। 12, 13, 14 को समय मध्यम है। शुभ कार्यों की ओर मन प्रेरित होगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। छोटी-मोटी यात्रा होना संभव होगा। 15, 16 को समय शुभ व अनुकूल होगा। साहस व पराक्रम के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

11 को समय शुभ होगा। स्वास्थ्य में सुधार महसूस करेंगे। 12, 13, 14 को समय मध्यम होगा। व्यय आदि पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। कार्य स्थिति सामान्य होगी। वाणी व व्यवहार पर नियंत्रण रखें। 15, 16 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। शुभ समाचार व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी। 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। घर-परिवार का वातावरण तनावपूर्ण होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

11 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शत्रु हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। 12, 13, 14 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। बिगड़े हुए कार्यों को सुधारने का अवसर प्राप्त होगा। 15, 16 को समय मध्यम होगा। विद्या अध्ययन आदि में रुचि कम होगी। 17 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

11 को समय शुभ है। रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। 12, 13, 14 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। स्वास्थ्य प्रभावित होगा। चिकित्सा आदि में व्यय होगा। 15, 16 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मानसिक तनाव व उलझनें कम होंगी। 17 को समय मध्यम होगा। घर-परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ेंगी।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

11 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। मन में शुभ विचारों का उदय होगा। 12, 13, 14 को समय शुभ होगा। हर क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के योग बनेंगे। संतान संबंधी समस्या का समाधान होगा। 15, 16 को सितारों की चाल आपके प्रतिकूल होगी। अनावश्यक भाग-दौड़ व परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 17 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

11 को समय मध्यम होगा। व्यर्थ के प्रपंचों से दूर रहना बेहतर होगा। 12, 13, 14 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में पद-प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होगी। 15, 16 को समय शुभ होगा। भाग्य साथ देगा। रुका हुआ सभी कार्य पूर्ण होगा। 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

11 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। पारिवारिक व सामाजिक उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। 12, 13, 14 को समय मध्यम होगा। धर्म-कर्म में आस्था बढ़ेगी व अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। 15, 16 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। राजनैतिक क्षेत्र में रुतबा बढ़ेगा। 17 को समय शुभ व अनुकूल होगा। मनोवांछित सफलता की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

11 को समय शुभ है, मनोकामना पूर्ण होगा। अपने प्रियजनों का सहयोग प्राप्त होगा। 12, 13, 14 को सितारों की चाल प्र. तिकूल होगी। अहंकार व क्रोध पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। 15, 16 को शनै:-शनै: परिस्थिति में सुधार होगा। पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहेगी। 17 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। शुभ समाचार प्राप्त होगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

11 को ग्रह-गोचर शुभ होगा मनोनुकूल फल की प्राप्ति होगी। 12, 13, 14 को समय शुभ व अनुकूल है। रुके हुए कार्यों में सिद्धि व सफलता प्राप्त करेंगे। 15, 16 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शुभ कार्य की योजना विफल होगी। 17 को धीरे-धीरे स्थिति अनुकूल होगी। घर-गृहस्थी का सुख प्राप्त होगा।

श्रावण शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी

युधिष्ठिर ने पूछा – मधुसूदन, श्रावण के शुक्ल पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है? कृपया, मेरे सामने उसका वर्णन कीजिये।

भगवान् श्री कृष्ण बोले – राजन्, प्राचीन काल की बात है, द्वापर युग के प्रारम्भ का समय था, माहिष्मतपुर में राजा महीजित् अपने राज्य का पालन करते थे, किन्तु उन्हें कोई पुत्र नहीं था, इसलिये वह राज्य उन्हें सुखदायक प्रतीत नहीं होता था। अपनी अवस्था अधिक देख राजा को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने प्रजा वर्ग में बैठ कर इस प्रकार कहा– प्रजाजनों, इस जन्म में मुझ से कोई पातक नहीं हुआ। मैंने अपने खजाने में अन्याय से कमाया हुआ धन जमा नहीं किया है। ब्राह्मणों और देवताओं का भी धन मैंने कभी नहीं लिया है। प्रजा का पुत्रवत् पालन किया, धर्म से पृथ्वी पर अधिकार जमाया तथा दुष्टों को, वे बन्धु और पुत्रों के समान ही क्यों न रहे हों, दण्ड दिया है। शिष्ट पुरुषों का सदा सम्मान किया और किसी को द्वेष का पात्र नहीं समझा। फिर क्या कारण है, जो मेरे घर में आज तक पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। आप लोग इस का विचार करें।

राजा के ये वचन सुन कर प्रजा पुरोहितों के साथ ब्राह्मणों ने उनके हित का विचार करके गहन वन में प्रवेश किया। राजा का कल्याण चाहने वाले वे सभी लोग इधर-उधर घूम कर ऋषिसेवित आश्रमों की तलाश करने लगे। इतने ही में उन्हें मुनि श्रेष्ठ लोमश का दर्शन हुआ। लोमश जी तत्वज्ञ, सम्पूर्ण शास्त्रों के विशिष्ट विद्वान, दीर्घायु और महात्मा हैं। उनका शरीर लोम से भरा हुआ है। वे ब्रह्मा जी के समान तेजस्वी हैं। एक-एक कल्प बीतने पर उनके शरीर का एक-एक लोम विशीर्ण टूट कर गिरता है, इसलिये उनका नाम लोमेश हुआ है। वे महामुनि तीनों कालों की बातें जानते हैं। उन्हें देख कर सब लोगों को बड़ा हर्ष हुआ। उन्हें निकट आया देख लोमश जी ने पूछा– तुम सब लोग किसलिये यहाँ आये हो? अपने आगमन का कारण बताओ। तुम लोगों के लिये जो हितकर कार्य होगा, उसे मैं अवश्य करूँगा।

प्रजाओं ने कहा– ब्रह्मन, इस समय महीजित् नाम वाले जो राजा हैं, उन्हें कोई पुत्र नहीं है। हम लोग उन्हीं की प्रजा हैं, जिनका उन्होंने पुत्र की भाँति पालन किया है। उन्हें पुत्रहीन देख, उनके दुःख से दुःखित हो हम तपस्या करने का दृढ़ निश्चय करके यहाँ आये हैं। द्विजोत्तम, राजा भाग्य से इस समय हमें आपका दर्शन मिल गया है। महापुरुषों के दर्शन से ही मनुष्यों के सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। मुने, अब हमें उस उपाय का उपदेश कीजिये जिससे राजा को पुत्र की प्राप्ति हो।

उनकी शेष पेज 14 पर

अटूट प्यार का प्रतीक है रक्षाबंधन

सावन के आगमन के साथ ही पर्वों की शुरुआत भी हो जाती है। सावन की रिमझिम फुहार तथा गरजते मेघों के मध्य मनुष्य अपने अपने तरीकों से पर्व मनाते है। वास्तव में हमारा देश पर्वों का भण्डार है, क्योंकि इसमें प्रत्येक धर्म और जाति के मनुष्य रहते है। धर्म निरपेक्ष होने की वजह से यहां सबको अपना-अपना धर्म पालन करने का पूर्ण हक है। इतने अगणित पर्वो के बीच राखी अथवा रक्षाबंधन का पर्व भी आता है, जिसे कोई नहीं भूलता। इस त्यौहार को सलोना भी कहते है। यह पर्व पुरातन काल से ही भाई-बहनों के अटूट प्यार का परिचायक है। यह पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहिन अपने भाई की दाहिनी कलाई पर अपने स्नेह का प्रतीक राखी बांधती है तथा भाई उसके बदले अपनी बहिन को कुछ उपहार तथा उसकी रक्षा करने का वचन देता है। बहिन के मात्र जिन्दगी की असंख्य खुशियां उस पर न्यौछावर कर देता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस पर्व का प्रचलन कब प्रारम्भ हुआ, यह नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि अर्जुन के वर के रूप में पाने के लिए सुभद्रा ने कृष्ण को राखी बांधी हो? हो सकता है कि इससे पूर्व भी ऐसा होता रहा हो। विशुद्ध समाजशास्त्रीय रूप में देखें, तो लगता है कि यह पर्व मात्र पुरुष वर्चस्व को नारी के मन में बराबर स्थापित करने के लिए ही प्रारम्भ हुआ होगा। कालान्तर में लोगों ने उसके स्वरूप को अधिक मुधर, अधिक स्नेहिल और रंगीन बना दिया होगा। वैसे आम गांवों में राखी पुरोहित लेकर आता है और यजमानों को बांधता रहा है। आज भी यह रिवाज है। प्रचलित है कि श्रावण मासे में शंकर की उपासना करनी चाहिए। पूरे माह यजमान के लाभ के लिए पुरोहित शिवजी की आराधना करता है और पूर्णिमा को पूर्णाहुति के पश्चात् अपने यजमान की रक्षार्थ राखी बांधता है।

पार्वती ने भगवान शिव को पाने के लिए उनकी उपासना की थी। अधिक बारीकी से अवलोकन करने पर यह तथ्य विदित होता

शेष पेज 15 पर

दुर्गाष्टमी पर विशेष

भगवती के विविध तीर्थ, व्रत उत्सव व पूजा के प्रकार

हमारे पूर्व मनीषियों ने भगवती की उपासना व व्रतोंत्सवों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है और उनकी पूजा के विविध प्रकारों का वर्णन किया हैं। प्रस्तुत है इस विषय पर स्वयं श्री देवी के श्री मुख से हिमालय को किया गया उपदेश जो श्रीमद्देवीभागवत से यहां उद्धृत किया जा रहा हैं।

एक बार भगवती श्री देवी से हिमालय ने पूछा– देवेशी! आपको परम प्रिय लगने वाले, पवित्र, प्रसिद्ध एवं दर्शनीय स्थान भूमण्डल पर कितने हैं? यह बताइये। माताजी! इसी के साथ आपको संतुष्ट करने वाले जो व्रत एवं उत्सव हैं, उन सबको भी मुझे बताने की कृपा कीजिये, जिससे मेरा मानव–जीवन सफल हो जाय।

श्रीदेवी बोली– दृष्टिगोचर होने वाले सभी स्थान मेरे हैं। सम्पूर्ण काल को मेरा व्रत समझना चाहिये तथा सभी समय मेरे उत्सव मनाये जा सकते हैं, क्योंकि मैं सर्वरूपिणी जो ठहरी। फिर भी पर्वतराज! मैं भक्तवत्सलतावश कतिपय स्थानों का परिचय कराती हूँ। तुम सावधान होकर सुनो।

कोलापुर नाम का एक परम प्रसिद्ध स्थान हैं, जहाँ लक्ष्मी सदा निवास करती हैं। दूसरे स्थान का नाम मातुः पुर हैं, उस पुरी में भगवती रेणुका रहती हैं। तुलजा पुर मेरा तीसरा स्थान हैं। ऐसे ही एक स्थान का नाम सप्तश्रृङ्ग हैं। हिंगुला, ज्वालामुखी, शाकाम्भरी, भ्रामरी, रक्तदन्तिका और दुर्गा इन देवियों के स्थान इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हैं। भगवती विन्ध्याचली का सर्वोत्तम स्थान और कांचीपुर स्थान अत्यन्त श्रेष्ठ माने जाते हैं। देवी भीमा और विमला के उत्तम स्थान इन्हीं के नाम से विख्यात हैं। श्रीचन्द्राला का महान स्थान कर्णाटक देश में हैं। ऐसे ही एक कौशिकी स्थान हैं। नीलाम्बा देवी का स्थान नील पर्वत के शिखर पर है। जाम्बूनदेश्वरी, श्रीनगर स्थान के पास रहती हैं। भगवती गुह्यकाली का महान स्थान नेपाल देश में हैं। भगवती मीनाक्षी का उत्तम स्थान चिदम्बर में बताया गया है। देवी सुंदरी का परम

शेष पेज 15 पर

गायत्री जयंती पर विशेष

गायत्री–महिमा व पूजा–विधि

भगवती गायत्री की महिमा से हमारे सद्ग्रंथ भरे पड़े हैं। हमारे प्राचीन मनीषियों ने विविध प्रसंगों में भगवती गायत्री के स्वरूप, महिमा व पूजा विधि का बखान किया हैं। गायत्री जयंती के अवसर पर हम आपके समक्ष श्रीमद् देवी भागवत पुराण से उद्धृत वह प्रसंग प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें नारद की जिज्ञासा शांत करते हुए भगवान नारायण ने खुद अपने श्रीमुख से गायत्री महिमा व पूजा विधि पर यथेष्ट प्रकाश डाला है।

देवर्षि नारद की जिज्ञासा शांत करते हुए भगवान नारायण कहते हैं– नारद! भिन्न पाद वाली गायत्री ब्रह्म हत्या का शमन करती है। अभिन्न पाद वाली गायत्री का जाप किया जाय तो पुरुष पाप का भागी बन जाता है। सुव्रत! धर्मशास्त्रों,पुराणों और इतिहासों में गायत्री विविध प्रकार की मानी गयी है– प्रणव से सम्पुटित, छः ॐकार से संयुक्त।'पाँच शास्त्रों की आज्ञा है। जितना जप करना अभीष्ट हो, उसके आठवें भाग में गायत्री के चौथे पाद का जप करना आवश्यक है। इस प्रकार जप करने वाले द्विज को भी ज्ञानी समझना चाहिये। वह सायुज्य पद का अधिकारी हो जाता है। एक सम्पुटा, षडोंकारा– ये दो गायत्रियाँ केवल ब्रह्मचारियों के लिये हैं। गृहस्थ, ब्रह्मचारी अथवा मोक्षकामी पुरुष तुरीया 'परो रज से सारदोम्' यही है। इस तुरीय पाद में ब्रह्म का ध्यान करने से ही जप का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है।

अब ध्यान बतलाता हूँ। सूर्य, चंद्रमा एवं अग्नि की तुलना करने वाला प्रणव स्वरूप, अचिन्त्यमय, विकसित, हृदयस्थ कमल ही जिनका आसन है, वे ब्रह्म अचल, परम सूक्ष्म, ज्योतिःस्वरूप एवं सच्चिदानन्दमय है, वे मेरी प्रसन्नता के साधक बनें।'

त्रिशूल, योनि, सुरभि, अक्ष, माला, लिंग और अम्बुज– ये सात महामुद्राएँ तुरीय गायत्री को प्रदर्शित करनी चाहिये। संध्या को ही गायत्री कहते हैं। इसका रूप सच्चिदानन्दमय है, अतएव द्विज को चाहिये कि भक्तिपूर्वक इन गायत्री देवी का नित्य पूजन और नमन करे। मन में ध्यान करके पाँच प्रकार के उपचारों से इनकी मानसिक पूजा की जाती है। 'लं' पृथ्वी–स्वरूपिणी देवी को गन्ध अर्पण करता हूँ, उन्हें बार–बार नमस्कार है। 'हं' आकाश स्वरूपिणी देवी को पुष्प समर्पण करता हूँ, उन्हें बार–बार नमस्कार है।

क्रमशः

बढ़ रही है बच्चों में मोटापे की समस्या

देश में बच्चों में मोटापा और उसके कारण खर्राटे लेने की बीमारी बढ़ रही है। एक अनुमान के अनुसार 8 से 12 प्रतिशत बच्चे खर्राटे और श्वास प्रक्रिया में अवरोध की बीमारी आब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया (ओएसए) से पीड़ित हैं। इन दिनों फास्टफूड, शीतलपेय और वसायुक्त खाद्य पदार्थों के बढ़ते सेवन, व्यायाम एवं शारीरिक श्रम की घटती आदतें तथा वीडियो और कम्प्यूटर गेमों के बढ़ते प्रचलन जैसे कारणों से बच्चों में मोटापे की समस्या बढ़ रही है।

मोटापे के कारण खर्राटे एवं स्लीप एप्निया की समस्या उत्पन्न होने की आशंका बहुत अधिक होती है। खर्राटे लेने वाले करीब 20 से 40 प्रतिशत मोटे बच्चे आब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया सिंड्रोम से प्रभावित होते हैं। सोते समय बार-बार श्वसन में अवरोध आने के कारण शरीर को कम आक्सीजन मिलती है और रक्त में आक्सीजन का स्तर कम हो जाता है जिसके कारण मानसिक विकास प्रभावित होता है तथा लंबे समय तक इसका इलाज नहीं होने पर डिप्रेशन, चिड़चिड़ापन, दिल के दौरे, स्ट्रोक, सिरदर्द, रक्तचाप एवं किडनी रोग जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

एक अध्ययन के अनुसार अमूमन दस में से एक बच्चा आदतन खर्राटे लेता है। बच्चों में खर्राटे एवं स्लीप एप्निया के कारणों में मोटापे के अलावा माता, पिता के खर्राटे की बीमारी से ग्रस्त होने तथा दिन में मुंह से सांस लेने की आदत प्रमुख है। स्कूल जाना शुरू करने से पहले खर्राटे लेने वाले 40 प्रतिशत बच्चों में रात में कफ की समस्या पैदा हो गई और जांच करने पर उन्हें दमे से ग्रस्त पाया गया।

ओएसए से ग्रस्त बच्चों को सोने के दौरान आक्सीजन बहुत कम मात्रा में और कार्बन डाईआक्साइड बहुत अधिक मात्रा में मिलने लगती है इसके कारण हृदय और फेफड़े के विकास प्रभावित होने के साथ-साथ उनमें व्यवहार संबंधी समस्याएं भी पैदा हो जाती हैं। इसका इलाज समय पर नहीं कराने के कारण मृत्यु भी हो सकती है। लेकिन अगर इसका शुरुआती अवस्था से ही इलाज आरंभ हो जाए तो बच्चा पूरी तरह ठीक हो सकता है। बच्चों में अनिद्रा, खर्राटे और स्लीप एप्निया जैसी समस्याओं का आरंभ में ही पता चल जाने पर दवाइयों से इलाज हो सकता है। लेकिन इलाज में देर होने पर सर्जरी की जरूरत पड़ जाती है।

आम तौर पर बच्चों में आब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया के लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं इसलिए माता-पिता को बच्चों के व्यवहार एवं उनकी आदतों पर ध्यान रखना चाहिये। हाइपरएक्टिविटी (एडीएचडी) स्कूल में खराब प्रदर्शन, खर्राटे, मुंह से सांस लेने, बिस्तर गीला करने, असंयमित अथवा उग्र व्यवहार जैसे लक्षण आब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया अथवा नींद संबंधी बीमारी के संकेत हो सकते हैं। बाल अवस्था अथवा युवावस्था में खर्राटे लेने को बिल्कुल नजरअंदाज नहीं करना चाहिये।

माध्यमिक स्कूल में खराब शैक्षणिक प्रदर्शन करने वाले बच्चों के बाल्यावस्था की शुरुआती अवस्था में ही खर्राटे से ग्रस्त होने की आशंका होती है। खर्राटे लेने वाले युवा बच्चों के दमा और रात के समय कफ से भी ग्रस्त होने की आशंका होती है। खर्राटे की शुरुआती अवस्था में ही पहचान और इलाज से बच्चों में सोते समय मृत्यु की आशंका कम की जा सकती है। कई बच्चों में स्लीप एप्निया का कारण साइनुसाइटिस, टॉसिल अथवा एनोनायड का बड़ा होना होता है। साइनुसाइटिस का इलाज एंटीबायोटिक दवाइयों से जबकि बढ़े हुए एडेनायड का इलाज सर्जरी के जरिए किया जाता है।

अनेक अध्ययनों से पता चला है कि खर्राटे लेने वाले माता, पिता की संतानों में खर्राटे की समस्या उत्पन्न होने की आशंका अधिक होती है। अध्ययनों के अनुसार खर्राटे नहीं लेने वाले माता-पिता के बच्चों की तुलना में माता-पिता में से किसी एक के भी खर्राटे की समस्या से ग्रस्त होने पर उनके बच्चे के भी खर्राटे लेने की आशंका तीन गुना बढ़ जाती है। इस अध्ययन से इस बात को बल मिलता है कि खर्राटे में आनुवांशिक कारणों का भी योगदान होता है। एक ताजा अध्ययन के अनुसार स्लीप एप्निया से ग्रस्त लोगों को ठीक से नींद नहीं आने तथा सोते समय समुचित आक्सीजन नहीं मिलने के कारण उनकी कार्यक्षमता एवं मानसिक क्षमता पर बुरा असर पड़ता है और वह डिप्रेशन तथा चिड़चिड़ापन जैसी समस्याओं से पीड़ित हो जाते हैं। इस वजह से खर्राटे एवं स्लीप एप्निया से ग्रस्त लोगों की सड़क दुर्घटनाओं में मौत होने की आशंका सामान्य लोगों की तुलना में तीन गुणा बढ़ जाती है। एक साल से अधिक उम्र के बच्चे अगर खर्राटे लेते हैं तो डॉक्टर को यह बात अवश्य बतानी चाहिए क्योंकि गंभीर खर्राटे अक्सर आब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया सिंड्रोम के लक्षण होते हैं। उनके अनुसार बच्चों में इसका संबंध सीखने की अक्षमता, उच्च रक्त चाप और हृदय रोगों से भी होता है।

पेज 9 का शेष

सुख-समृद्धि का मार्ग ...

कटुता की भावना उत्पन्न करता है। अहंकार तो हमारा सबसे बड़ा दोष है। जब हममें कर्तापन का भाव उत्पन्न होगा तो निश्चय ही हमारे अंदर अहं पैदा होगा जो हमारे सर्वांगीण विकास में सर्वथा बाधक है, इससे हमें दूर रहना होगा।

महानता उसी को कहते हैं, जब अन्य लोग हमें महान कहें। इसके लिए पात्रता अर्जित करनी पड़ती है, तब अन्य लोगों के हृदय में अपना स्थान बनता है। हम अपनी चेतना जितनी ही प्रखर करेंगे उतने ही महानता के निकट होंगे। व्यक्तित्व और चरित्र का सीधा संबंध है महानता से। महानता का पर्याय है चरित्र। चरित्र वह पूंजी है जो आचरण से तपाई जाती है। यदि हमने अपने जीवन में चरित्र, व्यक्तित्व और आचरण को सुरक्षित बचा लिया तो मानों बहुत कुछ बचा लिया। यदि हम रात्रि में सोने से पहले अपने दिनभर की क्रियाकलापों की समीक्षा कर लिया करें तो शायद अगले दिनों के लिए हमारा लोकव्यवहार सर्वथा अपने लिए और दूसरों के लिए भी अनुकूल रहेगा। आत्मनिरीक्षण की व्यवस्था यदि हम अपने जीवन में रखेंगे तो आने वाले समय में हमारी सुख-समृद्धि का मार्ग सदैव प्रशस्त रहेगा।

जो लोग असहायों-निर्धनों और मूक पशु-पक्षियों की सेवा करते तथा भगवान के प्रति गहरी आस्था और प्रेम रखते हैं। ऐसे लोग नैसर्गिक रूप से सदाचार, ईमानदारी और कर्त्तव्यपालन जैसे साधनों में संलग्न हो जाते हैं। वैसे मनुष्य अपना लोक-परलोक, दोनों सुधारने की क्षमता से युक्त हो जाते हैं। वैसे मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिए कि परिवार और सांसारिक प्रपंच में वह भगवान को न भुला दे। जीवन का असली उद्देश्य तो परमात्मा का सान्निध्य पाना ही है। भगवान को पाने के लिए सद्पुरुषों का सत्संग, सद्विवेक, विनम्रता और करुणा की भावना जरूरी है। इन सद्गुणों से युक्त व्यक्ति की जिज्ञासा के समाधान का मार्ग स्वाभाविक रूप से प्रशस्त हो जाता है। वह स्वयं की खोज में आगे बढ़ने के लिए तत्पर हो जाता है।

आज के आपाधापी भरे युग में हर व्यक्ति भाग रहा है, एक जगह से दूसरी जगह की ओर, एक तत्व से दूसरे तत्व की ओर दौड़ते-दौड़ते बेचैन हो गये हैं। जाने अनजाने संभवत: हर व्यक्ति शायद स्वयं को खोज रहा है, क्योंकि वह स्वयं को खो चुका है। स्वयं के साथ जुड़े संबंधों को तोड़ दिया है और अब उसे ही खोज रहा है। यदि आप अपने आसपास के हर व्यक्ति की तरफ ध्यान देंगे तो तकरीबन सबमें यही बात नजर आएगी। हर व्यक्ति स्वयं को भूलकर व्यर्थ की दौड़ में भागता चला जा रहा है। वह स्वयं को भूल गया है कि आखिर वह है कौन?

आज आवश्यकता है इस झंझावत से निकलने की, स्वयं के अस्तित्व को समझने की। परिवर्तन की इस सतत प्रक्रिया में स्थिर होने की। यात्रा हो, परंतु शून्य से महाशून्य की परिधि से केंद्र की, अज्ञान से ज्ञान की, अंधकार से प्रकाश की, असत्य से सत्य की। स्वयं के अस्तित्व को तलाशकर ही हम जीवन के सही मूल्यों को समझ पायेंगे। हम प्राय: अपना जीवन कंकड़-पत्थर बटोरने में बरबाद कर देते हैं। सत्ता, संपत्ति और सम्मान पाकर भी अंतत: शून्य ही हाथ लगता है। तो हम क्यों न आज ही जग जाएं, पुन: उठ खड़े हों।

स्वयं की खोज करके हमें अपनी अंतरात्मा को प्रकाशित करना चाहिए। हमारा ध्यान दुनिया में है, परंतु स्वयं के अंदर छिपी विराटता में नहीं। हम बहिर्मुखी हैं अंतर्मुखी नहीं। बस, यही हम सबको समझना है। सारी उलझन स्वयं को समझने में है। अपने परमपिता परमेश्वर के प्रति हम कृतज्ञता तक ज्ञापित नहीं करते, जिसने अपनी परम कृपा से हमें अपना ही अंश बनाकर इस धरा पर मनुष्य रूप में भेजा है। यदि हम स्वयं के प्रति थोड़ा सा सचेत हो जाएं तो बात बनते देर नहीं लगेगी। तमाम ऐसे लोग जिन्होंने जीवन में कुछ गौरवशाली कार्य किया, वे सभी स्वयं के अंदर छिपे अथाह सागर को समझने और मापने की बात करते हैं, जो कृत्रिमता से कोसों दूर हो, जहां गहन शांति हो। शांति में असीम शक्ति है, जिससे स्वयं के अस्तित्व को पहचानने की शक्ति प्राप्त होती है, साथ ही परमपिता परमात्मा की निकटता पाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

पेज 12 का शेष

श्रावण शुक्ल पक्ष की ...

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है, वह पुत्रदा के नाम से विख्यात है। वह मनोवांछित फल प्रदान करने वाली है। इसका माहात्म्य सुन कर मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है तथा इह लोक में सुख *पाकर पर लोक में स्वर्गीय गति को प्राप्त होता है।*

बात सुनकर महर्षि लोमेश दो घड़ी तक ध्यान मग्न हो गये। तत्पश्चात् राजा के प्राचीन जन्म का वृत्तान्त जान कर उन्होंने कहा - प्रजावृन्द, सुनो - राजा महीजित् पूर्व जन्म में मनुष्यों को चूसने वाला धन हीन वैश्य था। वह वैश्य गाँव-गाँव घूम कर व्यापार किया करता था। एक दिन जेठ के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि को, जब दोपहर का सूर्य तप रहा था, वह गाँव की सीमा में एक जलाशय पर पहुँचा। पानी से भरी हुई बावली देख कर वैश्य ने वहाँ जल पीने का विचार किया। इतने ही में वहाँ बछड़े के साथ एक गौ भी आ पहुँची। वह प्यास से व्याकुल और ताप से पीड़ित थी, अत: बावली में जा कर जल पीने लगी। वैश्य ने पानी पीती हुई गाय को हाँक कर दूर हटा दिया और स्वयं पानी पीया। उसी पाप कर्म के कारण राजा उस समय पुत्र हीन हुए हैं। किसी जन्म के पुण्य से इन्हें अकण्टक राज्य की प्राप्ति हुई है।

प्रजाओं ने कहा- मुने, पुराणों में सुना जाता है कि प्रायश्चित रूप पुण्य से पाप नष्ट होता है, अत: पुण्य का उपदेश कीजिये, जिससे उस पाप का नाश हो जाय।

लोमेश जी बोले- प्रजा जनों, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है, वह पुत्रदा के नाम से विख्यात है। वह मनोवांछित फ ल प्रदान करने वाली है। तुम लोग उसी का व्रत करो।

यह सुन कर प्रजाओं ने मुनि को नमस्कार किया और नगर में आकर विधिपूर्वक पुत्रदा एकादशी के व्रत का अनुष्ठान किया। उन्होंने विधिपूर्वक जागरण भी किया और उसका निर्मल पुण्य राजा को दे दिया। तत्पश्चात् रानी ने गर्भ धारण किया और प्रसव का समय आने पर बलवान् पुत्र को जन्म दिया।

इसका माहात्म्य सुन कर मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है तथा इह लोक में सुख पाकर पर लोक में स्वर्गीय गति को प्राप्त होता है।

पेज 12 का शेष

अटूट प्यार का ...

है कि भगवाान शिव जैसा वर पाने के लिए कुंवारी लड़कियां व्रत रखती है, शिव की अर्चना करती है। फिर बीच में भाई क्यों आ गया? कदाचित् इसलिए कि बहिन का शुभचिन्तक और आदर रखने वाला मात्र भाई ही होता है। लोकगीतों में भाई का पर्याय वीरन भी है। वीरन का आशय है-ऐसा भाई जो वीर भाई ही बहिन की रक्ष करने वाला है। लोकगीतों में करुण उल्लेख है कि कैसे भाई-बहिन की प्रत्येक तकलीफ में उसके घर जाकर उसके कष्ट-पीड़ा का भागीदार बनता है। अक्सर यह उल्लेख भी मिलता है कि वह बहिन का समग्र कष्ट पीड़ा अपनी गठरी में बांधकर ले जाता है। भाई के इस स्नेहिल आचरण के लिए बहिन की ममता भाई के प्रति होनी नैसर्गिक है।

रक्षासूत्र में लिपटे भाई-बहिन के इस पर्व के उद्‌भव के सन्दर्भ में एक कथा का उल्लेख है। कहते है कि राजा बलि ने तीनों लोकों को अपने पराक्रमों से जीत लिया, तो देवता परेशान हो उठे। तब विष्णु भगवान् ने वामन अवतार लेकर बलि से तीन पग धरती दान में मांगी। बलि ने इतनी-सी धरती देना हंसते हुए स्वीकार किया।

तब विष्णु ने वामन रूप में अपने दो पगों से तीनों लोकों को मापकर तीसरा पग बलि के सिर पर रख दिया और उसे धागे से बांधकर पाताल में भेज दिया। यह धागा भगवान विष्णु ने बलि की कलाई पर बांधा था। तभी से पुरोहित लोग रक्षा बंधन पर अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बांधते आ रहे हैं। इसी भांति एक बार जब भगवान कृष्ण के हाथ में चोट लगी, तो द्रोपदी ने अपना चीर फाड़कर कृष्ण के हाथ में बांध दिया। इस पर कृष्ण ने कहा, बहिन, तुम्हारा यह वीर मुझ पर ऋण है। मेरे ऊपर तुम्हारी रक्षा करने का दायित्व भी है।

तभी तो द्रोपदी के चीरहण पर भगवान् श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा चीर बढ़ाकर की थी। मान्यता है तभी से लोग यह रिवाज निभाते आ रहे है। इस रक्षाबंधन की उपयोगिता को केवल हिंदुओं ने ही नहीं ,अपितु दूसरे धर्मावलम्बियों ने भी माना है। मुगल बादशाह हुमायूं के बारे में एक ऐसी ही कथा प्रसिद्ध है, जो रक्षासूत्र की उपयोगिता तथा बहिन के प्यार को प्रदर्शित करता है। एक बार हुमायूं अपने सेनापति के साथ गांव की सैर कर लौट रहा था । रास्ते में खेत की मेड़ पर जाती हुए एक युवती को मन्त्रमुग्ध होकर अपलक निहारने लगा। यह देखकर सेनापति मन ही मन मुस्कुराया।

जब हुमायुं अपने महल में पहुंचा, तो अपने शयनकक्ष में जाते ही वह हतप्रभ होकर रह गया। वहां वही युवती खड़ी-खड़ी जोर-जोर से रो रही थी।

तुम कौन हो? क्यों रो रही हो? हुमायूं ने पूछा।

मैं अपने भाई को राखी बांधने जा रही थी कि आपका सेनापति मुझे यहां उठा लाया। उसने रोते-रोते बताया।

हुमायुं बोला, तुम कितनी पगली हो? अपने भाई के पास ही तो आयी हो। चलो पहले मुझे राखी बांधो।

हुमायूं ने राखी बंधवाकर उसे शीघ्र उसके भाई के पास भेजने का ऐलान किया और सेनापति को दण्ड देने लगे, लेकिन उस युवती ने हुमायूं से कहा, आज के दिन कोई भाई अपनी बहिन से जुदा नहीं होता है। इस दिन खून-खराबा भी नहीं होना चाहिए। आप अनुमति दें, तो मैं इसे भी भाई बना लूं। सेनापति ने युवती के चरणों में गिरकर माफी मांगी और धागे की हथकड़ी में खुद को गिरफ्तार करवा लिया।

इस त्योहार की पवित्रता और सामाजिक तथा पारिवारिक उपयोगिता से कोइ इन्कार नहीं कर सकता है, लेकिन एक रिवाज क्यों बनता जा रहा है? यह सत्य है कि बदलते वक्त के साथ आज बहिनें स्वावलंबी, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बन रही है। आज उन्हें भाइयों के द्वारा रक्षित होने की न तो अभिलाषा है और न ही जरूरत, लेकिन चिंता इस बात की है कि कहीं इस पर्व में समाहित स्नेह, प्रेम, समन्वय और निर्वहण की भावना खत्म हो जाती है।

आज हम भौतिकवादी युग में पदार्पण कर चुके है। जीवन की भागमभाग, तनाव और स्वार्थ के असर से काई बचा नहीं है। निश्चय की यह दुष्प्रभाव भाई-बहिनों के रिश्तों पर भी पड़ रहा है। यदि ऐसा नहीं है, तो क्यों परिवारों में भाईयों की तुलना में बहिने ज्यादा कुपोषण की गिरफ्त में है? क्यों जन्म लेने से पहले ही कन्याएं मौत की गोद में सुला दी जाती है? क्यों अमीर भाइयों के यहां तोहफों के साथ पहुंचा जाता है और निर्धन भाई को राखी बांधने की निरी औपचारिकता का निर्वहण किया जाता है।

पेज 13 का शेष

भगवती के ...

उत्तम स्थान वेदारण्य में हैं। भगवती पराशक्ति एकाम्बर नामक सुप्रसिद्ध स्थान में शोभा पाती हैं। भगवती महालसा और योगीश्वरी के स्थान इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हैं। देवी नीलसरस्वती का स्थान चीन देश में हैं। देवी बगला का सर्वोत्कृष्ट स्थान वैद्यनाथधाम में हैं। मैं सर्वैश्वर्यसम्पन्न भगवती भुवनेश्वरी हूँ। मेरा स्थान मणिद्वीप पर्वत पर कहा गया हैं। शंकर सती के शरीर को लेकर घूम रहे थे। उस समय सती का योनि-भाग जहाँ गिरा, वह स्थन कामरूप नामक देश से प्रसिद्ध हो गया। वहीं भगवती त्रिपुरसुंदरी का स्थान है। महामाया से सुशोभित यह स्थान जगत में जितने क्षेत्र हैं, उन सबका रत्न है, धरातल में इससे बढ़कर प्रसिद्ध स्थान कहीं कोई भी नहीं हैं। वह इतना जीता-जागता स्थान है कि प्रत्येक मास में देवी वहाँ रजस्वला हुआ करती हैं। उस समय वहां के रहने वाले ठहरने की व्यवस्था कर लेते हैं। विद्वान पुरुषों का कथन है कि उस अवसर पर वहाँ की कामाख्यायोनि मंडल से श्रेष्ठ अन्य कोई स्थान नहीं है।

हिमालय! सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से सम्पन्न पुष्कर क्षेत्र भगवती गायत्री का उत्तम स्थान कहा गया हैं। अमरकण्टक देश में भगवती चण्डिका का स्थान है। प्रभास क्षेत्र में भगवती पुष्करेक्षिणी रहती हैं। नैमिषारण्य परम प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ सम्पूर्ण शुभ लक्षणों से शोभा पाने वाली भगवती ललिता विराजती हैं। पुष्कर में देवी पुरुहूता तथा आषाढ़ी में देवी रति का उत्तम धाम हैं। चण्डुण्डी नामक स्थान में चण्ड और मुण्ड को शांत करने वाली भगवती परमेश्वरी विराजती हैं। भारभूति में देवी भूति का तथा नाकुल में देवी नकुलेश्वरी के धाम हैं। हरिश्चंद्र नामक स्थान में भगवती चन्द्रिका एवं श्रीशैल पर्वत पर भगवती

शांकरी प्रसिद्ध हैं। जप्येश्वरी में देवी त्रिशूला और आम्रकेश्वर में देवी सूक्ष्मा विराजती हैं। महाकाल नामक क्षेत्र में भगवती शांकरी, मध्यम संज्ञक स्थान में शर्वाणी तथा केदार नाम से प्रसिद्ध महान क्षेत्र में देवी मार्गदायनी शोभा पाती हैं। भैरव नामक स्थान भगवती भैरवी का तथा गया भगवती मंगला का स्थान कहा गया है। देवी स्थाणुप्रिया कुरु क्षेत्र में रहती हैं और देवी स्वायम्भुवी नाकुल में। कनखल में देवी उग्रा का, विमलेश्वर में विश्वेशा का, अट्टहास नामक स्थान में महानन्दा का, महेन्द्र पर्वत पर महान्त का, भीमा पर्वत पर भगवती शांकरी का, अर्द्धकोटि पर्वत पर रुद्राणी का, अविमुक्त क्षेत्र में विशालाक्षी का, महालय नामक स्थान में महाभागा का, गोकर्ण में भद्रकर्णी का, भद्रकर्णक में भद्रास्या का, सुवर्णाक्ष नामक स्थान में उत्पलाक्षी का, स्थाणु नामक स्थान में स्थाण्वीशा का, कमलालय में कमला का, छागलण्डक में प्रचण्डा का, कुरण्डल में त्रिसंध्या का, माकोट में भृकुटेश्वरी का, मण्डलेश में शाण्डकी का, कालंजर, पर्वत पर काली का, शङ्कुकर्ण पर्वत पर भगवती ध्वनि का तथा स्थूलकेश्वर पर्वत पर देवी स्थूला का धाम कहा गया हैं। परमेश्वरी हृल्लेखा सम्पूर्ण ज्ञानी पुरुषों के हृदयरूपी कमल पर विराजमान रहती हैं।

पर्वतराज हिमालय! ये उपर्युक्त सभी स्थान देवी को परम प्रिय हैं। पहले इन सम्पूर्ण क्षेत्रों का माहात्म्य सुने। तत्पश्चात शास्त्रोक्त विधि से देवी की पूजा में लग जायें। अथवा नगराज! ये सम्पूर्ण क्षेत्र काशी में ही विराजमान हैं। अत: देवी में श्रद्धा रखने वाला पुरुष निरंतर काशी में रहने का प्रयत्न करें। वहीं रहकर उक्त स्थानों का दर्शन करते हुए देवी के मंत्र का जप एवं उनके चरण कमलों का ध्यान करें। इस पुण्यमय कर्म के प्रभाव से पुरुष संसार बंधन से मुक्त हो जाता हैं। हिमालय! जो पुरुष प्रात:काल उठकर भगवती के इन नामों का उच्चारण करता है, उसके सम्पूर्ण पाप उसी क्षण तुरंत भस्म हो जाते हैं। द्विजमात्र का कर्तव्य है कि श्राद्ध के अवसर पर सर्वप्रथम इन नामों का पाठ करें। ऐसा करने से उसके समस्त पितर मुक्त होकर परम पद को पा जाते हैं।

उत्तम व्रत का पालन करने वाले हिमालय! अब तुम्हारे सामने व्रतों की चर्चा करती हूँ। ये सभी व्रत स्त्री और पुरुष प्राय: सबको यत्नपूर्वक करने चाहिये। जो तृतीया व्रत है, उसके तीन नाम हैं - अनन्ततृतीया व्रत, रसकल्याणिनी व्रत एवं आर्द्रानन्दकरी व्रत। शुक्रवार और चतुर्दशी को देवी का व्रत किया जाता हैं। भौमवार को भी देवी व्रत मानते हैं। प्रदोष देवी का वह व्रत है, जिस समय निशीथ रात में भगवान शंकर अपनी प्रेयसी प्रिया को आसन पर बैठाकर उनके सामने देवताओं सहित नृत्य करते हैं। उस दिन उपवास करके सायंकाल के प्रदोष में देवी की पूजा करनी चाहिये। देवी को विशेष रूप से संतुष्ट करने वाला यह व्रत प्रतिपक्ष में मनाया जाता हैं। हिमालय! सोमवार व्रत भी मेरे लिये बहुत प्रिय हैं। इस व्रत में दिनभर उपवास करके देवी का पूजन करने के पश्चात रात्रि में भोजन करना चाहिये। चैत्र और आश्विन - दोनों नवरात्र मुझे परम प्रिय हैं।

श्रावण महीने में एक पवित्रोत्सव होता है। उससे मैं बहुत प्रसन्न होती हूँ। मेरा भक्त इस व्रत का सदा पालन करे। ऐसे ही अन्य भी बहुत से महोत्सव हैं, जिन्हें मनाना चाहिये। उत्सव के अवसर पर मेरे भक्तों को प्रसन्नतापूर्वक भोजन करावे। सुवासिनी स्त्रियों को भोजन कराया जाय। कुमारी कन्याओं और ब्रह्मचारियों को मेरा ही स्वरूप समझकर उन्हें भोजन करावे। खुले हाथ से धन व्यय करते हुए कुमारी कन्याओं तथा ब्रह्मचारियों की पुष्प आदि से पूजा करें। जो इस प्रकार सावधान होकर प्रीतिपूर्वक प्रतिवर्ष पूजन करता हैं, वह धन्य, कृतकृत्य तथा निःसंदेह मेरा प्रेमपात्र हैं।

राजन! इसी प्रकार अन्य भी अनेक नित्य और नैमित्तिक व्रत हैं। जो राग-द्वेष से रहित होकर मेरी प्रसन्नता के लिये इन व्रतों का अनुष्ठान करता है, उसे मेरा सायुज्यपद प्राप्त हो जाता है। उस पुरुष को मैं अपना भक्त एवं प्रिय मानती हूँ। राजन्! व्रतों के अवसर पर झूला सजाकर मेरे उत्सव भी मनाने चाहिये। शयनोत्सव, जागरणोत्सव, रथोत्सव तथा दमनोत्सव आदि अनेक उत्सव हैं। इन्हें मनाना आवश्यक हैं।

श्रावण महीने में एक पवित्रोत्सव होता है। उससे मैं बहुत प्रसन्न होती हूँ। मेरा भक्त इस व्रत का सदा पालन करे। ऐसे ही अन्य भी बहुत से महोत्सव हैं, जिन्हें मनाना चाहिये। उत्सव के अवसर पर मेरे भक्तों को प्रसन्नतापूर्वक भोजन करावे। सुवासिनी स्त्रियों को भोजन कराया जाय। कुमारी कन्याओं और ब्रह्मचारियों को मेरा ही स्वरूप समझकर उन्हें भोजन करावे। खुले हाथ से धन व्यय करते हुए कुमारी कन्याओं तथा ब्रह्मचारियों की पुष्प आदि से पूजा करें। जो इस प्रकार सावधान होकर प्रीतिपूर्वक प्रतिवर्ष पूजन करता हैं, वह धन्य, कृतकृत्य तथा नि:संदेह मेरा प्रेमपात्र हैं। संक्षेप से मैंने यह सारी बातें बतला दीं। यह प्रसंग मेरे लिये बहुत ही प्रियकर हैं। जो मेरा अनुशासन न मानता हो तथा मेरे प्रति जिसकी श्रद्धा न हो, उसके सामने यह प्रसंग कभी नहीं करना चाहिये।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका	200
सरल गोचर प्रवेशिका	200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका	100
सरल वास्तु प्रवेशिका	150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका	150
ताजिक ज्योतिष	150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल	50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)	200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)	200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग	100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव	100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या	100
शनि उपासना क्यों और कैसे ?	200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य	100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान	100
शनिवार व्रत विधि व कथा	25
काल सर्प योग	100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
भोग रोग योग	200
चमत्कार को नमस्कार	100
अद्‌भुत देसी नुसखे भाग - 1	100
अद्‌भुत देसी नुसखे भाग - 2	200
अद्‌भुत देसी नुसखे भाग - 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1	125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5	200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार	80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार	30
आसनों द्वारा रोगोपचार	30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार	25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं	30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न	25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार	20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति	25
आसन:आरोग्यता का अनुपम साधन	225
प्राणायाम	150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए	100
मानुष तन दुर्लभ अति	30
हो कौन ? जाओगे कहां ? जानोगे कैसे ?	100
जीवन शांत मन के साथ	35
तनाव मुक्त जीवन	35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा	50
लाली मेरे लाल की	125
समाधान	150
एक शाश्वत खोज	125
मर्म की बातें (I,II,III)	75
कुडलिनी जागरण	200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प	125
कार्य सफलता में बाधक तनाव	125
Living with peace of life	35
Eternal Bliss	150
Shedding of stress	50
Effectuation of Shani Adoration	200
Tiny Tips	125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

आप भी कर सकते हैं शाश्वत सुख का सुधा पान- दाती श्री

भौतिक विज्ञान के विविध क्षेत्रों में जैसे-जैसे प्रगति होती जा रही है वैसे-वैसे अधिकांश मनुष्यों के अंदर एक क्षुद्र अहम इस प्रकार फैलता जा रहा है कि उसकी चपेट में अनेकानेक मानवोचित गुण अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। आजकल एक फैशन ही चल गया है कि भगवान और भगवान की अस्मिता को मानने वाले सिद्धांतों की खिल्ली उड़ायी जाये। किंतु ऐसा करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि मनुष्य की बुद्धि चाहे जितनी भी प्रखर हो गयी हो किंतु ऐसी विलक्षण बुद्धि से युक्त मनुष्य नामक प्राणी को बनाने वाली वह सर्वोच्च सत्ता निश्चय ही उससे ऊपर है। अत: उसकी अस्मिता को नकारना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

इस संसार में तरह-तरह के लोग रहते हैं। कुछ लोगों की मानसिकता अपने शरीर और निकट संबंधियों के हित साधन के दायरे में कैद रहती है तो कुछ लोगों को मनुष्य क्या, समस्त प्राणियों के हित साधन की चेष्टा करने में ही सुख-सुकून प्राप्त होता है। वे अपने निजी सुख-दुख की जरा भी परवाह न कर दूसरों की भलाई में अनवरत लगे रहते हैं। कुछ मनस्वी तो ग्राम, प्रांत व देश की सीमाओं से भी बहुत आगे निकल जाते हैं और उनके लिए पूरा विश्व ही एक परिवार बन जाता है। अधिकतर साधु-संत व फकीर ऐसे ही उदारमना होते हैं। सच पूछिए तो सच्चे साधु-संतों की सोच सामान्य लोगों से सर्वथा भिन्न होती है। वे गुरु-परंपरा से प्राप्त ज्ञान के आलोक में साधना कर इस सच्चाई को पूरी तरह आत्मसात कर चुके होते हैं कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाने के लिए सतत् सचेष्ट रहना है। उन्हें अपने ही अंतरतम में समस्त चराचर विश्व नजर आने लगता है। अत: अपने-पराये की भावना उन्हें छू भी नहीं पाती। वे उस सर्वोच्च सत्ता से व्यावहारिक रूप से इस प्रकार जुड़ चुके होते हैं कि उन्हें सबके साथ एकात्मता की अनुभूति होने लगती है। उनके स्वांत: सुखाय का दायरा इतना फैल चुका होता है कि उसमें सबके सुख की कामना बड़ी आसानी से समा जाती है।

ऐसे साधु-संतों व भगवद् भक्तों के बाहरी खान-पान व आचार आदि में भिन्नता भले नजर आये किंतु वे भीतर से एक ही जैसे होते हैं। वे अपनी अस्मिता को पूरी तरह भगवान की भक्ति में समर्पित कर चुके होते हैं और उस आनंद को अनेक तरीकों से व्यक्त करते हुए दूसरे लोगों को भी प्रभु की भक्ति करने की प्रेरणा देने के लिए भगवान का गुणानुवाद करने लगते हैं। वे साधु-संत व भक्तजन प्रभु के पावन नाम का सुमिरण व जाप करके अपने मानव तन को सार्थक बनाया करते हैं। जब भक्तजन भगवान का गुणानुवाद करने में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वे अपनी स्वतंत्र अस्मिता को भी भुला बैठते हैं तब जाकर वे भीतर बाहर हर तरफ से परमात्मा में विलीन होने की प्रक्रिया में अग्रसर होते हैं। उसी क्रम में जब भक्ति मार्ग में अग्रसर भक्त पर प्रभु की विशेष अनुकंपा होती है तब वे भगवान के नाम-सुमिरण की विधा में पारंगत होने के लिए सचेष्ट होने लगते हैं। क्योंकि प्रभु की महिमा का गान करते रहने से मनुष्य के अंदर सबके प्रति सौहार्द्रता व अपनत्व की भावना बड़ी तेजी से विकसित होने लगती है। वसुधैव कुंटुंबकम् की उत्कृष्ट भावना उसके अंदर कुलांचे मारने लगती है। उसके अंतर्तम में स्वत: गुरुकृपा से प्राप्त प्रभु के नाम, मंत्र व स्वरूप के निरंतर सुमिरण-भजन की प्रवृत्ति उभरने लगती है और वह प्रवृत्ति ही माता के समान उसके सारे क्लेशों को दूर कर उसे निश्चिंत बना देती है। उसे इस बात का स्पष्ट आभास होने लगता है कि इस चराचर जगत में जो भी जड़-चेतन प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है तथा जो किसी भी युक्ति से दिखायी नहीं दे रहा है, उसे भी सही रूप में तभी देखा जा सकता है जब गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से मनुष्य का विवेक जाग्रत हो उठता है। संतों ने भगवान की भक्ति में भजन-सुमिरण की महिमा को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया गया है कि प्रभ नाम सुमिरण की साधना करने वाला व्यक्ति वेदों के गूढ़ातिगूढ़ रहस्यों को भी उजागर करने में सफल हो जाता है।

गुरु से प्राप्त दीक्षा मंत्र व नाम का सुमिरण करते हुए जब भक्त गुरु आज्ञा के अनुकूल आचरण करने लगता है तब स्वाभाविक रूप से उसके अंदर वैसे अद्भुत गुण जाग्रत होने लगते हैं जो अन्य लोगों में नहीं पाये जाते। जब भक्त प्रभु के नाम सुमिरण में पूरी तरह लवलीन हो जाता है तब वह खुद भी वह मंत्र ही बनकर रह जाता है, वह वही नाम बन जाता है जिसे वह जप रहा होता है। दूसरे शब्दों में भजन-साधना में पूरी तरह एकाग्र होने पर जीव के अंदर का अहम पूरी तरह नष्ट हो जाता है, अथवा वह इतना विराट हो जाता है कि उसी में सारा ब्रह्माण्ड ही सिमट जाता है और तभी वह विशिष्ट मंत्र या नाम सिद्ध हुआ माना जाता है।

प्राचीन धर्मग्रंथों में इस बात को अनेक ढंग से समझाया गया है। स्वच्छंद तंत्र के अनुसार वही मंत्र सफल है जिसको जपने वाला अविनाशी परमात्मा स्वरूप सद्गुरु से मिल चुका हो अर्थात जिसे अपने गुरुत्व का ज्ञान हो चुका हो। मंत्र को इस प्रकार जपना चाहिए, मंत्र में इस प्रकार तल्लीन होना चाहिए मानो जाप करने वाला खुद ही मंत्र बन गया हो। उसके अंदर ऐसा भाव नहीं रहे कि जाप करने वाले व्यक्ति से मंत्र कोई अलग वस्तु है। जब ऐसा होता है तभी मंत्र को आत्मसात किया जाना या आत्मरूप बनाया जाना संभव हो पाता है।

इसीलिए मैं सबसे कहता हूं कि यदि अपने जीवन में शाश्वत सुख-शांति की सुधा का स्वाद लेना चाहते हो तो आप भी अपने-पराये के संकुचित दायरे से मुक्त हो सारे विश्व को अपना परिवार बनाने के लिए, विश्व के समस्त प्राणियों से एकात्मता स्थापित करने के लिए साधु-संतों के उस भावभूमि पर पहुंचने का प्रयास करें ताकि आपका भी स्वांत: सुखाय सबके सुख की कामना से एक रस हो जाये। किंतु याद रहे, साधु-संतों व भक्तों के उस भावभूमि पर पहुंचने के लिए आवश्यक है कि आप भी उन्हीं की तरह सनातन गुरु परंपरा से प्राप्त युक्ति का अवलंबन ले सत्य का अपने ही अंतरतम में साक्षात्कार कर उससे जुड़े रहने की अनवरत चेष्टा करते रहें। देर न करें, आज और अभी से सत्य के साक्षात्कार के मार्ग पर अग्रसर होने का दृढ़ संकल्प लें और अपने जीवन में उस शाश्वत सुख की सुधा को प्रवाहित होने का परिवेश सृजित करें।

दाती के अनमोल वचन

गुरुमंत्र में जरुर देखिये INDIA TV

पर हर रोज रात्रि 11:00 बजे